भारत भूमि की रक्षा करना हमारा कर्तव्य - कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में मनाया गया 68 वाँ गणतंत्र दिवस

वर्धा, दिनांक 26 जनवरी, 2017

हम ज्ञान –विज्ञान के क्षेत्र के साथ–साथ आर्थिक और अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन हमारे सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। कुछ चुनौतियाँ आंतरिक हैं, तो कुछ बाहरी हैं।

सीमाओं की सुरक्षा एक बड़ी चुनौती है। सीमाओं की सुरक्षा बहुत ज़रूरी है। सामरिक तथा निरंतर बातचीत तो इसका आधार है, लेकिन देश की आंतरिक चुनौतियों को सुलझाने के लिए आत्मचिंतन की

आवश्यकता है, यह भारत भूमि हमारी जननी है, उसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, उक्त विचार महात्मा

गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किए।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में आयोजित 68 वें गणतंत्र दिवस समारोह के

अवसर पर ध्वजारोहण के उपरांत दिए गए अपने उद्‌बोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र बोल रहे थे। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, प्रो. अरविंद कुमार झा

उपस्थित थे। सर्वप्रथम कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने गांधी हिल पर गांधी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर

अभिवादन किया। इस अवसर पर उनके साथ उपस्थित प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव

डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, प्रो. मनोज कुमार, प्रो. अरविंद कुमार झा, डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने भी गांधी

प्रतिमा पर पुष्प अर्पण कर अभिवादन किया। गांधी हिल पर माल्यार्पण के उपरांत प्रशासनिक भवन के प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. मिश्र द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

ध्वजारोहण के बाद अपने उद्बोधन में प्रो. मिश्र ने कहा कि गणतंत्र लोग का तंत्र है और गणतंत्र के चलते गण की रक्षा जरूरी है। उन्होंने लोकमान्य तिलक के कार्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इतिहास के सौ साल पीछे हम जाते हैं, तो तिलक की 'सिंह गर्जना' हमें याद आती है। तिलक ने कहां था कि 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार हैं और उसे हम लेकर रहेंगे', तिलक की इस कार्य दृष्टि से गणतंत्र दिवस महत्त्वपूर्ण है। प्रो. मिश्र ने जनता के अतिरिक्त आर्थिक आकर्षण पर चिंता जताते हुए कहा कि

अधिक धनसंचय की प्रवृत्ति के कारण सामाजिक मूल्यों में बदलाव आया है। जिसके कारण समाज में काफ़ी उतार-चढ़ाव हो रहे हैं। उनका मानना है कि आर्थिक मुद्दा महत्त्वपूर्ण है, लेकिन केवल अर्थ–अर्थ करने से काम नहीं होगा। अर्थ का अपना धर्म होता है, अर्थ वह धर्म है, जो नैतिकतापूर्ण उस धर्म का पालन करें, लेकिन आज आय बढ़ाने की होड़ लगी है। जिससे समाज में अमीर – गरीब के बीच की खाई गहरी होती जा रही है। इस दौरान उन्होंने देश में घटित कई आर्थिक दुर्घटनाओं का भी उल्लेख किया।

अकादमिक क्षेत्र के विभिन्न अनुशासनों में स्थापित हो रहें नए प्रतिमानों को स्वीकार करने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि अध्यापक की महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है, उन्हें अपने नए मानदंड स्थापित करने चाहिए। अकादमिक क्षेत्र में रहते हुए हमें अपने दायित्व का पालन करना चाहिए। समय पर अपना कार्य करना चाहिए। मर्यादा का सन्मान करना चाहिए। हमें अपने द्वारा बनाए गए नियमों

का यथावत पालन करना चाहिए। प्रो. मिश्र ने कहा कि अपनी संस्था का उत्कर्ष कैसा हो, संस्था आगे कैसे बढ़े, इस ओर प्रयास करने की बेहद जरूरत है, क्योंकि संस्था से ही हमारी गरिमा बढ़ती है। इसके पुष्टि हेतु उन्होंने विदेशों की संस्थाओं के अध्ययन के उदाहरण भी दिए। मीडिया की भाषा पर चिंता जताते हुए प्रो. मिश्र ने कहा कि टीवी की भाषा बहुत गड़बड़ हो रही, इस क्षेत्र की स्थिति को सुधारने हेतु विद्वान, साहित्यकार, अच्छे लेखकों को उन्होंने इस क्षेत्र में नए बदलाव लाने हेतु प्रयास करने की गुहार भी लगायी। हिंदी भाषा के विस्तार पर अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी अधिकाधिक बोली जानेवाली भाषा है। जिसका अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अटूट नाता है, लेकिन जिस भाषा में ज्ञान हो, वह भाषा ही विकसित होती है, इस संदर्भ में उन्होंने अंग्रेज़ी के अलावा जिन विदेशी भाषाओं के विद्वानों को नोबेल मिला उनका भी जिक्र किया। हिंदी भाषा के विस्तार के लिए प्रो. मिश्र ने हिंदी को उस दृष्टि से संपन्न कराने की जरूरत पर बल दिया। ध्वजारोहण समारोह के उपरांत मिठाई वितरण किया गया। गणतंत्र दिवस समारोह में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं विदेशी विद्यार्थियों की भारी संख्या में उपस्थिति थी।